# सर्वे भवन्तु: सुखिन: की संकल्पना को साकार करता भारतीय मजदूर संघ

**प्रेस कुमार चूड़ामन सूर्यवंशी*[1] & डॉ. मिथिलेश कुमार तिवारी[2]**

*[1] पी-एच.डी. शोधार्थी, वर्धा समाज कार्य संस्थान, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र।
[2]सहायक आचार्य, क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज, वर्धा समाज कार्य संस्थान, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र।

E-Mail: preskumar1994@gmail.com
DOI: **https://doi.org/10.5281/zenodo.17317479**
Accepted on: 15/09/2025 Published on: 10/10/2025

**सारांश:**

*राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षणिक माहौल में बदलाव ने भारतीय मजदूर संघ को एक ऐसे मंच के रूप में रूपांतरित किया है जो श्रमिकों के हितों की रक्षा करता है और उन्हें आगे बढ़ाता है, श्रमिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है तथा रोजगार के नियमों और शर्तों को स्थापित करने में उनकी पारंपरिक भूमिकाओं को बढ़ाता है। भारतीय मजदूर संघ का वैचारिक आधार भारतीय संस्कृति है। 'संस्कृति' मानव जीवन के सभी अंगों को समाहित करती है। जो उसके लिए विशिष्ट है, और जो फिर से, उसके जुनून, भावना, विचार, भाषण और कार्रवाई का संचयी प्रभाव है जो सभी के जीवन को प्रभावित करता है। हमारी संस्कृति की विशिष्टता ही इसकी पहचान है। मानव प्रगति को बढ़ावा देने में संस्कृति की अपनी विशिष्टता है। सामाजिक परिस्थितियों को नियंत्रित करने वाला इसका अपना कानून है। "एकात्म मानववाद" वह वैचारिक आधार है जिसने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में औद्योगिक प्रणाली के पुनर्निर्माण के लिए भारतीय मजदूर संघ के दृष्टिकोण को निर्धारित किया। भारतीय मजदूर संघ द्वारा समर्थित "राष्ट्रवाद" भारत की प्राचीन संस्कृति एवं परंपरा पर आधारित है। श्रम को हमेशा भारतीय सामाजिक संरचना की नींव और समाज का अभिन्न और महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। इसलिए, भारतीय मजदूर संघ जो समस्याएं उठाता है, वे अनुभागीय नहीं बल्कि राष्ट्रीय हैं। इसलिए, श्रमिकों के हितों की रक्षा करना और उन्हें बढ़ावा देना पूरे राष्ट्र की स्वाभाविक जिम्मेदारी है, और भारतीय मजदूर संघ श्रम के प्रति इस मौलिक राष्ट्रीय कर्तव्य को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। मानवता को शांति, प्रगति और समृद्धि का आनंद प्रदान करना भारतीय मजदूर संघ के प्रयासों से सफल हो रहा है। यह शोध लेख इस विमर्श की पड़ताल करता है कि कैसे भारतीय मजदूर संघ किस प्रकार सर्वे भवन्तु: सुखिनः की संकल्पना को साकार करता है? प्रस्तुत शोध लेख द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है।*

***मुख्य बिंदु:*** *सर्वे भवन्तु: सुखिनः, मजदूर संघ, भारतीय मजदूर संघ*

**प्रस्तावना:** 1980 में श्रम मंत्रालय द्वारा सत्यापित आंकड़ों के अंतिम संकलन के अनुसार, भारतीय मजदूर संघ भारत में एक महत्वपूर्ण ट्रेड यूनियन संगठन के रूप में उभरा है और श्रमिकों के बीच समर्थन के मामले में अग्रणी भूमिका निभाता है।

भारतीय मजदूर संघ की संकल्पना की महत्वपूर्ण विशेषता इसका "गैर-राजनीतिक ट्रेड यूनियन आंदोलन" होने का दावा है, जो अन्य ट्रेड यूनियन आंदोलनों के विपरीत है, जो न केवल राजनीतिक दलों से जुड़े हैं बल्कि दलगत राजनीति में भी शामिल हैं। "राजनीति" के बजाय, भारतीय मजदूर संघ का दावा है कि यह श्रमिकों के अंदर "राष्ट्रवाद" की भावना जागृत करता है और खुद को श्रमिक मुद्दों तक ही सीमित रखता है। हालाँकि, वास्तविकता में अप्रत्यक्ष रूप से, प्रारंभ में इसका संबंध तत्कालीन भारतीय जनसंघ (बीजेएस) और वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जैसे राजनीतिक दलों और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) के साथ रहा है। भारतीय मजदूर संघ की पच्चीसवीं वर्षगांठ पर दत्तोपन्त ठेंगडी जी ने कहा था कि "*हमने हमेशा भारतीय मजदूर संघ को अपने आप में एक लक्ष्य के रूप में नहीं बल्कि श्रमिकों और राष्ट्र की सेवा में एक प्रभावी साधन के रूप में माना है*"। दत्तोपन्त ठेंगडी का मानना था कि : "वे वास्तविक ट्रेड यूनियनवाद पर आधारित एक राष्ट्रीय केंद्र के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, अर्थात्, “श्रमिकों का, श्रमिकों के लिए और श्रमिकों द्वारा एक संगठन” हो। वे राष्ट्रनीति (राष्ट्रीय नीति) या लोकनीति (जनता की नीति) के समर्थक थे। कई विशेषज्ञों का मानना है कि दत्तोपन्त जी ने राष्ट्रीय हितों के ढांचे के भीतर श्रमिकों के हितों की सुरक्षा और संवर्धन की मांग करते हुए भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की **(सक्सेना, 1993)**। इस प्रकार, राष्ट्रवाद भारतीय मजदूर संघ के लिए महत्वपूर्ण है और सर्वे भवन्तु सुखिनः के आधार पर यह संगठन कार्य करता हुआ प्रतीत होता है। भारतीय मजदूर संघ अपने सदस्यों के कल्याण को बढ़ावा देने में कई भूमिकाएँ निभाता है। उदाहरण के लिए-

1. भारतीय मजदूर संघ सौदेबाजी में शक्ति की भूमिका निभाता है,
2. किसी भी प्रकार के भेदभाव को कम करता है,
3. सदस्यों में भागीदारी की भावना को विकसित करता है,
4. आत्म अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करता है,
5. कर्मचारी संबंधों की बेहतरी (कर्मचारी और कर्मचारी संबंध, कर्मचारी प्रबंधन और प्रबंधन संबंधएवं ट्रेड यूनियन और संगठन के अन्य हितधारकों का संबंध) के लिए कार्य करता है, और
6. इसके सदस्यों में नौकरी की सुरक्षा की भावना के लिए कार्य करता है।

**(मोएती-ल्यस्सों एवं ओंगोरी, 2011)**।

“ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः” (Om Sarve Bhavantu Sukhinah) एक संस्कृत मंत्र है, जिसका अर्थ है, “सभी को सुखी बनाए रहें”। यह मंत्र तैत्तिरीय उपनिषद से लिया गया है।और एक शांति मंत्र के रूप में भी जाना जाता है। इस मंत्र का उद्देश्य

सभी जीवों के लिए सुख ,शांति ,समृद्धि, की कामना करने के लिया जाता है। भारतीय संस्कृति में सर्वे भवन्तु सुखिनः सहानुभूति और करुणा के विकास का द्योतक है। साथ ही यह समाज में सद्भावना का प्रसार तथा सहयोग और सेवा का भाव जागृत करता है। यह अवधारणात्मक रूप से आत्मविश्वास और सकारात्मकता को बढ़ाते हुए प्रेम और दया का विकास करता है।

भारतीय मजदूर संघ के लक्ष्य और उद्देश्यों में इसकी संकल्पना परिलक्षित होती है। जो इस प्रकार है-

1. **जनशक्ति और संसाधनों का पूर्ण उपयोग:** जिससे पूर्ण रोजगार और अधिकतम उत्पादन प्राप्त हो सके और अधिक से अधिक लोगों तक रोजगार की पहुँच को सुगम कराना है जिससे अधिक से अधिक लोग सुखी जीवन व्यतीत कर सकें|
2. **लाभ के उद्देश्य को सेवा के उद्देश्य से प्रतिस्थापित करना** और आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना के परिणामस्वरूप सभी व्यक्तिगत नागरिकों और समग्र रूप से राष्ट्र के सर्वोत्तम लाभ के लिए धन का समान वितरण करना जिससे समाज में समानता आए तथा सुख, समृद्धि बनी रही।
3. **राष्ट्र के अधिकतम औद्योगीकरण के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को जीवनयापन योग्य वेतन के साथ काम का प्रावधान करना** जिससे सभी व्यक्ति को जीवनयापन हेतु उपयुक्त साधन उपलब्ध हो सके और सभी सुखपूर्वक अपना जीवनयापन कर सकें।
4. आम तौर पर श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नागरिक और सामान्य स्थितियों में सुधार के लिए आवश्यक अन्य कदम उठाना।
5. श्रमिकों और समाज के अच्छे स्वास्थ्य के लिए भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) किसी भी प्रकार की दवाओं, शराब, अल्कोहल और धूम्रपान के उपयोग के खिलाफ रहा है। जो सर्वे संतु निरामया की संकल्पना को साकार करता है कि सभी निरोग रहें और स्वस्थ जीवनयापन करें।
6. सामान्य रूप से आम आदमी और विशेष रूप से श्रमिकों और उनके परिवारों के समग्र कल्याण के लिए सहायता प्रदान करना या सहकारी समितियों, कल्याण संस्थानों, क्लबों आदि की स्थापना करना।

**मजदूर संघों का पाश्चात्य एवं भारतीय पैराडाइम:**

वज्जीराजन ने अपने शोध में मजदूर संधों के कार्य-पद्धतियों का अध्ययन करते हुए भारतीय मजदूर संघ एवं अन्य संधों में तुलनात्मक रूप से निम्नलिखित अंतर पाया है-

1. **एकीकृत सोच**– भारतीय मजदूर संघ एकीकृत सोच पर कार्य करता है अर्थात् उच्च अधिकारी से ले कर निम्न स्तर के कर्मचारी सभी के साझा विचार के एकीकृत रूप से कार्य करने की प्रणाली अपनाता है। खुले शब्दों में कहे तो भारतीय मजदूर संघ सभी के विचारों का सम्मान करता है जबकि पाश्चात्य मजदूर संघ विभाजित सोच पर कार्य करते हैं।

2. **शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक प्राणी के रूप में मनुष्य**–भारतीय मजदूर संघ मनुष्य को अर्थात् श्रमिकों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक प्राणी के रूप स्वीकार करता है जबकि पाश्चात्य मजदूर संघ मनुष्य को मात्र भौतिक प्राणी के रूप में स्वीकार करता है।
3. **समाज के अहम हिस्से के रूप में श्रमिक** – भारतीय मजदूर संघ श्रमिकों को समाज के एक अहम हिस्से के रूप में मानता है जैसे शरीर जिसके सभी अंगों की अपनी विशेषता होती है उसी प्रकार समाज में रहने वाले सभी व्यक्ति समाज का विशेष अंग है और सभी की अपनी विशेषता है चाहे वह उच्च अधिकारी हो अथवा निम्न स्तर का कर्मचारी हो जबकि पाश्चात्य मजदूर संघ में समाज, आत्मकेन्द्रित व्यक्तियों के एक क्लबके रूप में जाना जाता है अर्थात् पाश्चात्य मजदूर संघ आत्मकेन्द्रित हो कार्य करने में विश्वास रखता है।
4. **सभी के लिए ख़ुशी**– भारतीय मजदूर संघ सभी के लिए ख़ुशी, सुख, समृद्धि की कामना करता है जबकि पाश्चात्य मजदूर संघ स्वयं के लिए ख़ुशी अर्थात् स्वकेंद्रित कार्य प्रणाली पर विश्व करता है।
5. **सेवा भाव**– भारतीय मजदूर संघ सेवा भाव से स्थापित किया गया था और आज भी वह सेवा भाव से ही कार्य कर रहा है जबकि पाश्चात्य मजदूर संघों की बात की जाये तो वह मात्र लाभ के भाव से कार्य करते हैं अर्थात भारतीय मजदूर संघ सेवा भाव को प्राथमिकता देता है जबकि पाश्चात्य मजदूर संघ लाभ को प्राथमिकता देता है।
6. **कर्त्तव्य-उन्मुख**– भारतीय मजदूर संघ कर्तव्य-उन्मुखता पर बल देता अर्थात् इस मजदूर संघ से जुड़े व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करना अपनी जिम्मेदारी समझते हैं जबकि पाश्चात्य मजदूर संघ अधिकार उन्मुखता पर बल देता है।
7. **दूसरों के अधिकारों के प्रति जागरूकता**– भारतीय मजदूर संघ दूसरों के अधिकारों के प्रति जागरूकता प्रदान करता है जबकि पाश्चात्य मजदूर संघ दूसरों के कर्तव्यों के प्रति जागरूक करता है **(वन्नीराजन, 1996)**।

## भारतीय संस्कृति एवं भारतीय मजदूर संघ

"एकात्म मानववाद" वह वैचारिक आधार है जिसने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में औद्योगिक प्रणाली के पुनर्निर्माण के लिए भारतीय मजदूर संघ दृष्टिकोण को निर्धारित किया। भारतीय मजदूर संघ द्वारा समर्थित "राष्ट्रवाद" भारत की प्राचीन संस्कृति एवं परंपरा पर आधारित है। भारतीय सामाजिक संरचना में श्रम को हमेशा ही नींव और समाज का अभिन्न और महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। इसलिए, भारतीय मजदूर संघ जो समस्याएं उठाता है, वे अनुभागीय नहीं बल्कि राष्ट्रीय हैं। इसलिए, श्रमिकों के हितों की रक्षा करना और उन्हें बढ़ावा देना पूरे राष्ट्र की स्वाभाविक जिम्मेदारी है, और भारतीय मजदूर संघ श्रम के प्रति इस मौलिक राष्ट्रीय कर्तव्य को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है अर्थात् देखा जाए तो भारतीय मजदूर संघ सर्वे भवन्तु सुखिनः की संकल्पना को साकार करने का प्रयास करता है **(मेहता, 1990)**। भारतीय मजदूर संघ राष्ट्रवाद धर्म पर आधारित है, जिसका पता भारत के प्राचीन अतीत से लगाया जा सकता है। दत्तोपन्त ठेंगडी एक भाषण में कहते हैं: "हम एक प्राचीन राष्ट्र हैं और हम जानते हैं कि 12 शताब्दियों तक हम विदेशी आक्रमणकारियों के खिलाफ जीवन और मृत्यु के

संघर्ष में लगे हुए थे और यही कारण है कि हमारे पास समय नहीं था, जैसा कि हमारे पास अतीत में फिर से करने के लिए समय हुआ करता था। समय की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार अपनी सामाजिक संरचना को समायोजित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। भारतीय मजदूर संघ भारत के प्राचीन धर्म से प्रेरणा लेने का दावा करता है, और खुद को अन्य ट्रेड यूनियन संगठनों से अलग एक स्वदेशी श्रमिक संगठन मानता है जो अन्य देशों से प्रेरणा लेते हैं। अपनी स्वदेशी प्रकृति, या शुद्ध भारतीयता को दोहराने के लिए, यह अंतरराष्ट्रीय ट्रेड यूनियन आंदोलन से जुड़े विदेशी प्रतीकों और संकेतों को अस्वीकार करता है, और श्रमिक आंदोलन पर विदेशी साहित्य के बजाय, भारतीय मजदूर संघ अपने कार्यकर्ताओं को प्राचीन भारतीय लेखन, विशेष रूप से शुक्राचार्य का दर्शन (शुक्रनीति) का अध्ययन करने और उस पर निर्भर रहने की सलाह देता है। भारतीय मजदूर संघ ने अपने भोपाल सम्मेलन में लाल के बजाय भगवा (भगवा) ध्वज को अपनाया क्योंकि भगवा को बलिदान का रंग माना जाता है और इसका उपयोग भारतीय साधु-संतों द्वारा किया जाता था। इसने अंगूठे, मुट्ठी, अनाज और पहिये को अपने प्रतीकों के रूप में अपनाया। यह संगठन दावा करता है कि वे विशिष्ट रूप से भारतीय हैं। इसलिए त्याग और सेवा का प्रतीक, भगवा झंडा भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) का प्रेरणा स्रोतहै। भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) का प्रतीक चिन्ह मानव नियंत्रित औद्योगिक विकास और कृषि समृद्धि के बीच तालमेल का प्रतीक है। जो चलते पहिये और मकई के ढेर के बीच मजबूत, आत्मविश्वासी और खड़े अंगूठे की छाप से स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है **(दवे, 2001)**। इसने अंतरराष्ट्रीय मई दिवस को मजदूर दिवस के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया। श्रम को हमेशा भारतीय सामाजिक संरचना की नींव माना गया है और हमारी (भारतीय) संस्कृति ने श्रम की गरिमा को सबसे अधिक महत्व दिया है और, श्रम की गरिमा के प्रतीक के रूप में, हजारों वर्षों से पूरे देश में श्रमिकों द्वारा एक राष्ट्रीय श्रमिक दिवस (विश्वकर्मा दिवस) मनाया जाता था। भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) ने भारतीय श्रम की मांगों के अपने राष्ट्रीय चार्टर में सरकार से 17 सितंबर को मजदूर दिवस घोषित करने का आग्रह किया है।

इस प्रकार भारतीय मजदूर संघ का दावा है कि इसकी उत्पत्ति राष्ट्रीय संस्कृति में हुई है। यह साम्यवाद, मार्क्सवाद और पूंजीवाद को खारिज करता है, और दावा करता है कि भारतीय मजदूर संघ का अंतिम लक्ष्य एकात्म मानववाद के सिद्धांतों के आधार पर भारतीय सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना है। भारतीय मजदूर संघ पूंजीवाद और समाजवाद की आलोचना करते हुए मानता है कि जहाँ एक तरफ पूंजीवाद उत्पादन के केंद्रीयकरण पर जोर देते हुए मुनाफे की वकालत करता है वहीं समाजवाद वितरण के पहलू पर जोर देता है। भारतीय मजदूर संघ उत्पादन एवं वितरण दोनों पर समान जोर देता है; अधिकतम उत्पादन श्रम का राष्ट्रीय कर्तव्य है, लेकिन साथ ही, उत्पादन के फल का समान वितरण श्रमिकों का वैध

अधिकार है **(सक्सेना, 1993)**। भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) औद्योगिक श्रमिकों की सदस्यता और कृषि श्रमिकों की संबद्ध यूनियनों की संख्या के मामले में अग्रणी भूमिका निभाने के बाद भी ट्रेड यूनियन केंद्रों की संख्या में दूसरे स्थान पर आता है। दरअसल, भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) ने तुलनात्मक रूप से कम समय में जबरदस्त प्रगति की है।

उपर्युक्त तथ्यों को देखा जाए तो यह समझ आता है कि भारतीय मजदूर संघ सभी के हितों के लिए कार्य करता है। सेवा भाव से प्रेरित हो कर कार्य करना इसकी प्राथमिकता है। यह मजदूर संघ न सिर्फ सेवा भाव से कार्य करता है बल्कि सभी के लिए सुख-समृद्धि लाने का प्रयास करता है। यह मनुष्य को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक प्राणी के रूप स्वीकार करता है। जो कि सर्वे भवन्तु सुखिनः की संकल्पना को साकार करते हुए नजर आता है।

**संदर्भ:**


- दवे, एच., (2001). भारतीय मजदूर संघ (एट अ ग्लेन्स). https://vvgnli.gov.in/sites/default/files/Bharatiya%20Mazdoor%20Sangh%20At%20a%20Glance.pdf
- मेहता, एम. बी., (1990). स्टोरी ऑफ़ बीएमएस, 9-10.
- मोएती-ल्यस्सों, जे. एवं ओंगोरी, एच., (2011). इफेक्टिवनेस ऑफ़ ट्रेड यूनियन्स इन प्रमोटिंग एम्प्लोई इन ऑर्गेनाइजेशन्स, ग्लोबल जर्नल ऑफ़ आर्ट्स एंड मैनेजमेंट. *राइजिंग रिसर्च जर्नल पब्लिकेशन, 1*(4), 57-64.
- वन्नीराजन, आर., (1996). ट्रेड यूनियन मूवमेंट इन इंडिया: अ स्टडी विथ स्पेशल रेफ़रन्स टू भारतीय मजदूर संघ, *पी-एच.डी. शोध प्रबंध*, डिपार्टमेंट ऑफ़ बैंक मैनेजमेंट, अलगप्पा यूनिवर्सिटी, https://vvgnli.gov.in/sites/default/files/Trade%20Union%20Movement%20in%20India%20A%20Study%20with%20Special%20Reference%20to%20Bharatiya%20Mazdoor%20Sangh.pdf
- सक्सेना, के., (1993). द हिन्दू ट्रेड यूनियन मूवमेंट इन इंडिया: द भारतीय मजदूर संघ. *यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफोर्निया प्रेस, 33*(7), 685-696.